

Чамакам

Анувака 2

ज्यैष्ट्यं च म अधिपत्यं च मे मन्त्रश्च मे भास्त्रं मेऽस्त्रं मेऽस्त्रं मे जेमा च मे
महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्ष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे
सत्यं च मे श्रद्धा च मे ॥ ४ ॥



джэйштхъя́м ча ма́ а́дхипат्यам ча ме ма́ньющчá мे бхáмáщчá ме ма́щчá
мембхáщчá ме джемá чá ме ма́химá чá ме варимá чá ме пратхима чá ме
варшмá чá ме дрágху́й чá ме ври́дхам чá ме ври́дхийщчá ме сáтьям чá ме
шраддхá чá ме ॥ 4 ॥

Да буду я наделён высоким положением, владычеством и выдающимися качествами. Да будет моё негодование справедливо, а гнев – праведен. Да буду я обладать безупречным самоконтролем, чтобы проявлять гнев с достоинством. Да будет у меня вдоволь чистой и свежей воды. Надели меня доблестью, чтобы я мог наносить поражение, завоевывая богатство и славу. Да будут другие уважать меня и искать моего общества. Да увеличится мое богатство и владения. Надели меня хорошим потомством, чтобы мой род никогда не прервался. Пусть моя учёность, характер и правдивость наделят меня естественным превосходством над другими. Да буду я обладать верой в Шастры и Веды, а также оптимизмом в отношении будущего.

ज्यैष्ट्यं च म अधिपत्यं च मे



джэйштхъя́м ча ма́ а́дхипат्यам ча ме

मन्त्रश्च मे भास्त्रं मेऽस्त्रं मेऽस्त्रं मे



ма́ньющчá мे бхáмáщчá ме ма́щчá мембхáщчá ме

जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे



ज्ञेमाचामे माहिमाचामे वरिमाचामे प्रथिमाचामे

वर्ष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे



वर्षमाचामे द्राघुयाचामे व्रिद्धमाचामे व्रिद्धिश्च मे

सत्यं च मे श्रद्धा च मे ॥ ४ ॥



सत्यामाचामे श्रद्धामाचामे ॥ ४ ॥

जगच्च मे धनं च मे वशश्च मे त्विषिंश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे
जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च
मे सुगं च मे सुपर्थं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे कृसं च मे कृसिंश्च मे मृतिश्च मे सुमृतिश्च मे ॥ ५ ॥



ज्ञेयाच्च मे धनामाच्च मे वाशाच्च मे त्विषिंश्च मे क्रीडाच्च मे मोदश्च मे जातं च मे
ज्ञेयमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च
मे सुगं च मे सुपर्थं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे कृसं च मे कृसिंश्च मे मृतिश्च मे सुमृतिश्च मे ॥ ५ ॥

Да буду я наделён движимым и недвижимым имуществом, а также многочисленным золотом и серебром. Да будет моя личность привлекательна и неотразима. Да будет моё тело сильным и крепким, чтобы я мог получать удовольствие и радость от спорта и игр. Да будет наследство, перешедшее ко мне от предков, всегда со мной. Да будет под защитой всё, что я приобретаю. Да овладею я ведическими гимнами и да обрету я святую заслугу, совершая священные ритуалы и праведные действия. Да будут мои прошлое, настоящее и будущее полны богатства и процветания. Пусть я всегда буду жить в приятных, гостеприимных и безопасных домах. Пусть всё у меня идёт в этом мире гладко и пусть я буду наделён духовными заслугами в мире следующем. Да буду я в этой жизни обеспечен материальным комфортом в изобилии, и да сумею я использовать его наилучшим образом. Да буду я наделён блестящим и уравновешенным интеллектом, чтобы я мог с блеском выпутываться из трудных ситуаций.

जगच्च मे धनं च मे वशश्च मे त्विषिश्च मे



ज्ञागाच्चा मे धनाम् चा मे वाशाच्चा मे त्विषिश्चा मे

क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे



क्रीडा चा मे मोदाच्चा मे ज्ञातम् चा मे ज्ञानीश्यमाणम् चा मे

सूक्तं च मे सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे



सूक्तम् चा मे सुकृतम् चा मे वित्तम् चा मे वेद्यम् चा मे

भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च मे



भूतम् चा मे भविष्यत्त्वाच्चा मे सुगम् चा मे

सुपथं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे



सुपथम् चा मा रिद्धम् चा मा रिद्धिश्चा मे

क्लृप्तं च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे



क्लृप्तम् चा मे क्लृप्तिश्चा मे मतिश्चा मे सुमतिश्चा मे